



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19-01-23	4	1-4

### सलाह • हरी पत्तेदार सब्जियों, मटर, आलू व टमाटर की फसल को पाले से बचाने के लिए करें सिंचाई

# जनवरी के तीसरे व चौथे सप्ताह में सब्जी की फसलों को शीतलहर व पाले से बचाना जरूरी

महबूब अली | हिसार

सर्दियों के मौसम में हरी पत्तेदार सब्जियों, मटर, आलू व टमाटर को सबसे ज्यादा नुकसान पाले से होता है। इस मौसम में सब्जी वाली फसलों में कीट व रोग बहुत कम लगते हैं और जितना नुकसान सब्जियों को ठंड के मौसम में कीड़ों से नहीं होता, उससे अधिक पाला पड़ने से होता है। एचएयू के वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों को बचाव की सलाह दे रहे हैं। जनवरी के तीसरे व चौथे सप्ताह में देखभाल की अधिक जरूरत होती है।

शीतलहर व पाले के प्रभाव से पौधे की कोशिकाओं में पानी बर्फ बनकर जम जाता है, जिससे कोशिकाओं की भित्ति फट जाती है। पौधों की पत्तियां, फूल, फलियां, शाखाएं, कोमल तने की कोशिका झिल्ली फटने से झुलस कर सूखने लगती है। इससे पैदावार में कमी आ जाती है। एचएयू के कुलपति प्रो बी आर काम्बोज ने बताया की



आलू की फसल



टमाटर की फसल।



मटर की फसल।

जिन क्षेत्रों में पाला पड़ने की संभावना अधिक होती है, उन क्षेत्रों में किसानों को फसलों की पाला सहनशील किस्मों की बिजाई करनी चाहिए, ताकि उपज पर विपरीत प्रभाव न पड़े। सब्जी वैज्ञानिक डॉ. अर्चना ने बताया की पाले से बचाव के लिए मेड़ों पर

वायुरोधक शीशम व जामुन जैसे पौधे लगाने की सलाह दी जाती है। पाले से बचाव के लिए सब्जी फसलों में शाम के समय हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। इससे भूमि व फसलों का तापमान बढ़ जाता है और इससे पाले के असर को कम किया जा सकता है।

### मल्टिचिंग विधि

मल्टिचिंग विधि से भी सर्दियों में सब्जियों की देखभाल की जा सकती है। प्लास्टिक मल्टिच व ऑर्गेनिक मल्टिच तकनीक भी सब्जी फसल उत्पादन के लिए लाभकारी है। मल्टिचिंग विधि पौधों के आस-पास की मिट्टी के तापमान को बनाए रखती है और पौधों की जड़ों को पर्याप्त गर्माहट प्रदान करती है।

### लो कास्ट तकनीक भी लाभदायक

लो कॉस्ट पॉलीहाउस तकनीक से सब्जियों की पौध तैयार कर किसान नर्सरी को शीतलहरों से बचा सकते हैं तथा इससे सब्जी की पौध सफलतापूर्वक तैयार की जा सकती है। इस विधि से बीजों का अंकुरण शत-प्रतिशत होता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन के जागरण	19-01-23	2	3-6

### ज्वार की खोजी नई बीमारी को अमेरिका ने दी मान्यता

जामा रण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिएला वैरीकोला की खोज की है।

वैश्विक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निदेशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द अनुवांशिक स्तर पर प्रतिरोध स्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे।

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस), यूएसए द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लान्ट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एपीएस) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे



कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ज्वार की नई बीमारी की खोज करने वाले वैज्ञानिकों के साथ। • पीआरओ

पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबसिएला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया

है। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य मौजूद थे।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण : अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। उन्होंने बताया कि बीमारी को लेकर

#### इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डा. मनजीत घणघस, डा. पूजा सांगवान, डा. पम्मी कुमारी, डा. बजरंग लाल शर्मा, डा. पवित्रा कुमारी, डा. दलविंदर पाल सिंह, डा. सत्यवान आर्य और डा. नवजीत अहलावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

वैज्ञानिकों ने चार साल की मेहनत के बाद इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक तथा महेंद्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। निकट भविष्य में बीमारी की रोकथाम हो सकेगी।

पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एचएस सहारण ने कहा कि ज्वार की नई बीमारी की जल्द पहचान से योजनाबद्ध तरीके से प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	18.01.2023	-----	-----

## एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार खोजी ज्वार की नई बीमारी

अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ने दी बीमारी को मान्यता



पाठकपत्र न्यूज

**हिसार, 18 जनवरी :** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई बीमारी व इसके कारक जीवाणु क्लेबसिलेला बैरिफोला की खोज की है। चौथक स्तर पर पहली बार ज्वार फसल में इस तरह की बीमारी का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के कार्य शुरू कर दिए हैं व जल्द से जल्द आनुवंशिक स्तर पर प्रतिरोध स्त्रोत को खोजने की कोशिश करेंगे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

अंतरराष्ट्रीय संस्था ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता

पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.), यू.एस.ए. द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित जर्नल प्लैंट डिजीज में वैज्ञानिकों की इस नई बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध

रिपोर्ट के रूप में जर्नल में स्वीकार कर मान्यता दी है। अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (ए.पी.एस.) पौधों की बीमारियों के अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है जो विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने ज्वार में क्लेबसिलेला लीफ स्ट्रीक बीमारी पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

बीमारी के बाद इसके प्रसार की निगरानी व उचित प्रबंधन का हो लक्ष्य : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरती खतरों की समय पर पहचान

महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के आगे प्रसार पर कड़ी निगरानी रखने को कहा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल डोंगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा व मौडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य भी मौजूद थे।

वर्ष 2018 में ज्वार की फसल में दिखाई दिए थे लक्षण

अनुरोधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि पहली बार खरीफ-2018 में ज्वार में नई तरह की बीमारी दिखाई देने पर वैज्ञानिकों ने तत्परता से काम किया। चार साल की मेहनत के बाद वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की खोज की है। वर्तमान समय में राज्य के मुख्यतः हिसार, रोहतक व महेंद्रगढ़ में यह बीमारी देखने को मिली है। पादप रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एच.एस. सुधारण ने कहा कि बीमारी की जल्द पहचान में योजनाबद्ध प्रजनन कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

इस बीमारी के मुख्य शोधकर्ता और विश्वविद्यालय के प्लैंट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी, यूएसए द्वारा दिसंबर, 2022 के दौरान 'क्लेबसिलेला लीफ स्ट्रीक डिजीज ऑफ सोरगम' पर शोध रिपोर्ट को स्वीकार किया गया है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दुनिया में इस बीमारी के सबसे पहले शोधकर्ता माने गए हैं। डॉ. मलिक ने कहा कि कई रूपान्तरक, जैसे रासायनिक, आणविक और रोगजनकता परीक्षणों के आधार पर हम यह साबित करने में कामयाब रहे कि एक जीवाणु क्लेबसिलेला बैरिफोला इस बीमारी का कारक है। यह रोग पत्तियों पर छोटी से लेकर लंबी लाल-भूरे रंग की धारियों के रूप में प्रकट होता है। समय के साथ, इन धारियों का संख्या में वृद्धि होती है जो बाद में निःशोथ क्षेत्र में परिवर्तित हो जाते हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों डॉ. मनवीर धण्डस, डॉ. पूजा सांगवान, डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. वज्रवीर लाल शर्मा, डॉ. पवित्रा कुमारी, डॉ. दलविंदर पाल सिंह, डॉ. सत्यवान आर्य और डॉ. नवजीत अठलावत ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।